International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.newresearchjournal.com/education
Volume 1; Issue 2; February 2016; Page No. 27-28

हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में मीडिया का योगदान

पूजा रानी

एम.फिल.छात्रा, दक्षिण भारत हिन्दी, प्रचार सभा, मद्रास

प्रस्तावना

21वीं सदी की व्यावसायिकता जब हिन्दी को केवल शास्त्रीय भाषा कहकर इसकी उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लगाने लगी, तब इस समर्थ भाषा ने न केवल अपने अस्तित्व की रक्षा की, वरण इस घोर व्यावसायिकता के युग में संचार की तमाम प्रतिस्पर्धाओं को लांघकर अपनी गरीमामयी उपस्थिति कराई हिन्दी भाषा के संचार में वैष्विक क्रान्ति ला दी। आज हर व्यक्ति हिन्दी भाषा को बोल भी सकता है और समझ भी सकता है। भले ही लिख या पढ़ न पाय।

कोई भी व्यक्ति, समूह या समाज बातचीत या संवाद किए बिना जीवित नहीं रह सकता परन्तु संचार के माध्यम से यह कार्य सरल हो जाता है। मनुष्य अपने भावों, विचारों तथा अनुभवों को दूसरों के साथ बांटने के लिए संचार के विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करता है।

संचार का अर्थ :–

संचार शब्द का अर्थ है – सूचनाओं एवं विचारों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाना अर्थात फैलाव या विस्तार। अंग्रेजी में संचार के लिए 'कम्यूनिकेशन' शब्द है जो लेटिन के 'कम्यूनिस' से बना है। जिसका अर्थ है– समझ का साँझा आधार।

संचार की परिभाषा :–

क) पीटर लिटल– "संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिस के माध्यम से सूचना व्यक्तियों या संगठनों के बीच संप्रेषित की जाती है ताकि समझ में वृद्धि हो।" [1]

ख) जे.पाल.लीगन्स– "संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति विचार, तथ्य, भावनाओं का विनिमय करते हैं ताकि दोनों की समझ बढ़ें।" [2]

भारत में हिन्दी और देवनागरी लिपि को विश्व के मानचित्र पर इंटरनेट व वेबसाइट के माध्यम से स्थापित करने का श्रेय इन्दौर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र **'नई दुनिया'** को जाता है। कम्पयूटर, इंटरनेट और वेबसाइट में देवनागरी लिपि के प्रयोग से नई–नई संभावनाएं उभर रही है।

श्री विजय कुमार मल्होत्रा :– "विंडोज 2000 आ चुका है। विंडोज 2000 के रिलीज के बाद यह महसूस किया जाने लगा था कि भारतीय भाषाओं को यदि परिचालन प्रणाली में अन्तर्निहित नहीं किया गया तो उनमें अनेक कमियां रह जायेंगी।" [3]

श्री विकास मिश्र :– "विश्व के क्षितिज पर **'वेब दुनिया (www)'** के आगमन से इंटरनेट पर देवनागरी लिपि की सर्पिना हुई। यह भारतीय भाषाओं और लिपियों विशेषकर देवनागरी की ऐतिहासिक उपलब्धि है।" [4]

डॉ0 शैलेन्द्र कुमार शर्मा :– "विश्व के इस पहले हिन्दी पोर्टल का विकास वेब दुनिया डॉट काम (इंडिया) लि. ने किया है। जो 23 सितम्बर 1999 को इंटरनेट पर उपलब्ध हो गया है।" [5]

मीडिया ने विभिन्न कम्पनियां अपने माल को बेचने के लिए जिन विज्ञापनों का प्रयोग कर रही है, उन विज्ञापनों में हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिकतम हो रहा है। आज के इस युग में विज्ञापनों का बोलबाला है। लोग विज्ञापनों को देखते हैं तथा हिन्दी भाषा को सुनते हैं। इस प्रकार विज्ञापन गुरू जान चुकें हैं कि अगर माल बेचना है तो उन्हें हिन्दी में ही बाजार में उतारना पड़ेगा।

विज्ञापन की परिभाषा

पाष्चात्य दृष्टिकोण

शैल्डन :– "विज्ञापन वह व्यवसायिक शक्ति है, जिससे मुद्रित शब्दों द्वारा विग्रह करने या वृद्धि करने, उसकी ख्याति और साख–निर्माण करने में सहायता मिलती है।" [6]

बैंक बेस्बी– "विज्ञापन मुद्रित, लिखित, उच्चरित अथवा चित्रित विक्रय कला है।" [7]

भारतीय दृष्टिकोण

श्रेवाशंकर शर्मा – "विज्ञापन समाचार पत्र की रीढ़ की हड्डी होता है और कोई भी पत्र विज्ञापन के बिना चल नहीं सकता है।" [8]

के.पी.नारायणन– "विज्ञापन का प्रत्यक्ष सम्बन्ध प्रचार–प्रसार स है।" [9]

जिस हिन्दी भाषा का प्रयोग मीडिया के विभिन्न माध्यमों द्वारा किया जा रहा है, कुछ लोग उसे "हिंग्लिश" कहते है परन्तु हिन्दी भाषा अपने आप में ही सर्वगुर्सिम्पन्न भाषा है। तभी तो मीडिया ने हिन्दी भाषा के प्रयोग को अपने विकास का तथा हिन्दी के प्रचार–प्रसार का माध्यम बनाया है।

बाजारवाद का दुनिया में बोलबाला बढ़ रहा है। उत्पादक हिन्दी भाषा का प्रयोग तरह–तरह से उपभोक्ताओं को लुभाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसलिए देश विदेश की बड़ी–बड़ी कम्पनियां अपना–अपना माल बाजार में बेचने के लिए मीडिया के दोनों रूपों (इलैक्ट्रॉनिक मीडिया व प्रिंट मीडिया) का प्रयोग बड़े स्तर पर कर रही है।

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिंट मीडिया के विभिन्न माध्यमों से समाचारों को देश विदेश के कोने कोने तक पहुंचाया जा सकता है। समाचारों का भी हिन्दी भाषा के संचार में महत्वपूर्ण योगदान है।

समाचार की परिभाषा –

क) प्रोफेसर विलियम जे.बलेयर– "अनेक व्यक्तियों की अभिरूचि जिस सामयिक बात में हो, वह समाचार है।" [10]

ख) के. पी. नारायणन– "समाचार किसी सामयिक घटना का, महत्वपूर्ण तथ्यों का परिशुद्ध तथा निष्पक्ष विवरण होता है, जिससे उस समाचार पत्र में पाठकों की रूचि होती है, जो इस विवरण को प्रकाशित करता है।" [11]

ग) टर्नर केटलिज– "समाचार कोई ऐसी चीज है जिसे आप कल तक नहीं जानते थे।" [12]

1. इलैक्ट्रोनिक मीडिया :–

इलैक्ट्रोनिक मीडिया के विभिन्न साधनों जैसे– रेडियो, टेलीविजन, कम्पयूटर, एफ.एम. रेडियो तथा विज्ञापन कम्पनियों व एजेंसियों की बाढ़ में बिना लाग लपेट वाली हिन्दी का ही बाजार चल रहा है। इंटरनेट पर हिन्दी की कई वेबसाईट हैं। आज इंटरनेट पर हिन्दी का लगभग अधिकतम साहित्य उपलब्ध है। यदि किसी व्यक्ति को किसी साहित्यकार की जीवनी, कहानी, नाटक आदि किसी भी रचना की जानकारी प्राप्त करनी है तो वह इंटरनेट पर उसकी खोज करके उससे सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकता है।

इलैक्ट्रोनिक जन संचार माध्यमों ने हिन्दी के प्रयोग में क्रान्ति ला दी है। टेलीविजन, रेडियो आदि पर प्रत्येक चैनल आम बोलचाल की हिन्दी भाषा का प्रयोग करके अनेक प्रोग्राम प्रसारित कर रहा है। क्योंकि हिन्दी जन–जन की भाषा है तथा आसानी से बोली व समझी जाती है। लोग अपनी पसंद के नाटक, फिल्में, कृषि सम्बन्धी प्रोग्राम, ज्ञान वर्द्धक बातें आदि इन चैनलों के माध्यम से देखते हैं। हिन्दी के अखबार व कई पत्र पत्रिकाएं भी नेट पर आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

2. प्रिंट मीडिया :–

प्रिंट मीडिया भी हिन्दी भाषा के विकास में बढ़–चढ़ कर योगदान दे रहा है। अनेकों पत्र–पत्रिकाएं, अखबार, पैम्फलेट्स आदि के द्वारा उपभोक्ता अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। भारत में अधिकतर लोगों को अन्य भाषाओं का ज्ञान नहीं है। मीडिया लोगों के भावों को समझते हुए हिन्दी भाषा को आम जनता में प्रचलित करने के लिए अपने विभिन्न माध्यमों द्वारा हिन्दी का प्रयोग कर रहा है।

पत्र–पत्रिकाएं समाज का दर्पण होती है। समाज में घटित हुआ अथवा जो घटित होगा– इन सबका वर्णन पत्र–पत्रिकाओं में किसी न किसी रूप में अवश्य होता है। पत्रकार के पास इन सब घटनाओं का पूरा हिसाब होता है। वह पत्रकार रूप में जिस साहित्य की सृष्टि करता है, वह समाज का साहित्य होता है। जिसमें समाज के सुख–दुख, हर्ष विषाद, आशा–निराशा आदि होते हैं। पत्रकारिता के माध्यम से भी हिन्दी भाषा आज देश की सर्वोत्तम भाषाओं में मानी जाती है।

पत्रकारिता की परिभाषा :–

क) महात्मा गाँन्धी– "पत्रकारिता का एक उद्देष्य जनता की इच्छाओं–विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है, दूसरा उद्देष्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना और तीसरा उददेष्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।" [13]

ख) महादेवी वर्मा– "पत्रकारिता एक रचनाशील विद्या है। इसके बगैर समाज को बदलना असंभव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा।" [14]

बाजारवाद के असर से हिन्दी भाषा का रूप बदल रहा है। कुछ लोग हिन्दी को बाजारू हिन्दी की संज्ञा भी दे देते हैं परन्तु हिन्दी एक सरल, स्पष्ट, शुद्ध व परिनिष्ठित भाषा है। सर्वमान्य है कि यही लोग जब आम बोलचाल में हिन्दी भाषा का उच्चारण करते समय व्याकरण के नियमों का पालन नहीं करते तब मीडिया के विभिन्न माध्यमों द्वारा हिन्दी भाषा के सरल, स्पष्ट, शुद्ध तथा फूहड़पना रहित हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है। व्याकरणिक नियमों के बंधन से रहित भाषा ही आम आदमी की हिन्दी भाषा है। प्रत्येक व्यक्ति इसी हिन्दी का प्रयोग अधिकतर आम बोल–चाल में प्रयोग करता है। मीडिया में जो चलता है, वही दिखता है। इसका श्रेय हिन्दी भाषा को जाता है।

सर्वप्रचलित तथा व्यवहार–कुशल हिन्दी ही संपर्क भाषा का रूप ले सकती है, न कि व्याकरणिक या साहित्यिक भाषा। मीडिया में जिस हिन्दी का प्रयोग होता है, उसमें सामान्य बोलचाल में प्रचलित अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। मीडिया में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी को और भी प्रयोजनमूलक बनाने का श्रेय मीडिया को जाता है। मीडिया ही हिन्दी भाषा के माध्यम से लोगों को प्रत्येक क्षेत्र (खेल, संगीत, व्यापार, खबर, नाटक) आदि की जानकारी प्रदान कर रहा है। जिससे लोगों को घर बैठे–बैठे ही प्रत्येक क्षेत्र की जानकारी हो रही है।

इस प्रकार मीडिया हिन्दी भाषा के विकास में भारत की एक सशक्त शक्ति के रूप में उभर रहा है।

संदर्भ सूची :–

1. संपादक (डॉ. जैन के.डी., डॉ.सिंघल सुरेश, गर्ग राहुल), पुस्तक–प्रयोजनमूलक हिन्दी, पृष्ठ संख्या –117
2. वही
3. वही, पृष्ठ संख्या –53
4. वही, पृष्ठ संख्या –52
5. वही
6. वही, पृष्ठ संख्या –108
7. वही
8. वही, पृष्ठ संख्या –109
9. वही
10. वही, पृष्ठ संख्या –154
11. वही
12. वही
13. वही, पृष्ठ संख्या –60
14. वही